बिहार का इतिहास

कला, संस्कृति एवं समाज

बिहार लोक सेवा आयोग एवं बिहार में आयोजित होने वाले अन्य समकक्ष प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए समान रूप से उपयोगी

इस पुस्तक को प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा तथा साक्षात्कार में पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर लेखन की संकल्पना के साथ साथ लोक सेवा आयोग द्वारा प्रश्नों की बदलती प्रकृति के अनुरूप है तैयार किया गया है।

निःशुल्क सामग्री के लिए नीचे दिये गये Coupon को Scratch कर अपना Coupon Code प्राप्त करें। सामग्री के लिए chronicleindia.in पर अपना रजिस्ट्रेशन करें, अगर पहले से ही रजिस्टर्ड हैं तो दोबारा जरूरत नहीं

संपादकः एन. एन. ओझा
(सिविल सेवा परीक्षाओं के मार्गदर्शन में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव)
लेखन एवं प्रस्तुतिः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

बिहार का इतिहास कला, संस्कृति एवं समाज

प्रथम संस्करण 2022

बुक कोड: 401

मूल्य: ₹210

ISBN : 978-81-950712-7-2

प्रकाशक

क्रॉनिकल पब्लिकेशंस प्रा. लि.

कॉरपोरेट ऑफिस:

ए-27डी, सेक्टर-16, नोएडा-201301,
फोन नं: 0120-2514610-12,
E-mail : info@chronicleindia.in

संपर्क सूत्र:

संपादकीय : 9582948817, editor@chronicleindia.in
ऑनलाइन सेल सहयोग: 9582219047, onlinesale@chronicleindia.in
तकनीकी सहयोग : 9953007634, Email Id: it@chronicleindia.in
विज्ञापन : 9953007627, advt@chronicleindia.in
सदस्यता : 9953007629, Subscription@chronicleindia.in
प्रिंट संस्करण सेल : 9953007630, circulation@chronicleindia.in

सर्वाधिकार सुरक्षित © क्रॉनिकल पब्लिकेशंस प्रा. लि.: इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुन: प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से- इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी और ढंग से, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

पुस्तक में प्रकाशित सामग्री उपरोक्त विषय पर प्रकाशित पुस्तकों/जर्नल/रिपोर्ट/ऑनलाइन कंटेंट आदि से संकलित है। लेखक/संकलनकर्ता/प्रकाशक, प्रकाशित सामग्री की मूल लेखन का दावा नहीं करता। प्रकाशित सामग्री को पूर्णत: त्रुटि रहित बनाने का प्रयास किया गया है, फिर भी किसी भी प्रकार के त्रुटि के लिए क्षतिपूर्ति का दावा प्रकाशक/लेखक द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा। शंका की स्थिति में पाठक स्वयं भारत सरकार के दस्तावेज व अन्य स्त्रोतों के माध्यम से जांच कर सकते हैं

सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।, **पंजीकृत कार्यालय:** एच-31, जी.पी. एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016, मुद्रक: एस के एंटरप्राइजेज, मुंडका, उद्योग नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली - 110041

पुस्तक के विषय में ...

बिहार के इतिहास, कला संस्कृति तथा समाज विषय पर आधारित यह पुस्तक मुख्यत: बिहार लोक सेवा आयोग व बिहार में आयोजित होने वाले अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ साथ सामान्य पाठकों के लिए भी उपयोगी है जो बिहार की कला संस्कृति और समाज के बारे में अपना ज्ञानवर्द्धन करना चाहते हैं।

इस पुस्तक को प्रतियोगिता परीक्षा के प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा तथा साक्षात्कार में पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर लेखन की संकल्पना के साथ साथ लोक सेवा आयोग द्वारा प्रश्नों की बदलती प्रकृति के अनुरूप है तैयार किया गया है।

यह अपने संकल्पनात्मक स्वरूप और सामाजिक सांस्कृतिक विवरण के कारण एक अद्वितीय पुस्तक है जो बिहार की इतिहास कला संस्कृति तथा समाज के बारे में सूक्ष्मता से उसके हर पहलुओं का विश्लेषण करता है साथ ही बिहार के समस्त जिलों और क्षेत्रों से सम्बन्धित सभी जानकारी को समाहित करता है इसलिए इसके समान कोई अन्य पुस्तक वर्तमान में प्रतियोगी छात्रों को उपलब्ध नहीं है इसकी अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है की इसमें सभी स्तर की परीक्षा हेतु विस्तृत रूप से संकलित अध्ययन सामग्री दी गयी है तथा उन सभी प्रश्नों के उत्तर को यथासंभव समाहित किया गया है जो आगामी परीक्षा में पूछे जा सकते है।

इस पुस्तक के अध्ययन के पश्चात छात्र परीक्षा में बिहार के कला संस्कृत और समाज से सम्बन्धित किसी भी तरह के कठिन से कठिन प्रश्नों का उत्तर संकल्पनात्मक समझ के साथ अंकदाई स्वरूप में देने में सक्षम हो सकेंगे।

अनुक्रमणिका

खंड (क)

बिहार का इतिहास

प्राचीन इतिहास

1. बिहार का इतिहास जानने के स्रोत 10

- साहित्यिक स्रोत 10
- विदेशी यात्रियों के विवरण 13
- पुरातत्व संबंधी साक्ष्य 16
- बिहार आने वाले विदेशी यात्री 18

2. बिहार का प्राचीन इतिहास 19

- बिहार में आर्यों के आगमन से पूर्व के संदर्भ 20
- बिहार में आर्यों का विस्तार 21
- बिहार के प्रमुख महाजनपद 21
- बिहार के प्रमुख गणराज्य 23
- बिहार में स्थित प्राचीन गणराज्य 24
- मगध साम्राज्य का उदय 27
- शिशुनाग वंश 31
- नंद वंश 32
- मौर्य राजवंश 35
- मौर्य वंश के प्रमुख शासक 35
- अशोक का मूल्यांकन 43
- अशोक के अभिलेख 45
- शुंग राजवंश 48
- कण्व राजवंश 50
- आंध्र व कुषाण वंश 50
- गुप्त राजवंश (275 ईस्वी-510 ईस्वी) 51
- गुप्त वंश के प्रमुख शासक 51
- उत्तर गुप्तकाल 60
- मगध में मौखरि वंश 63
- पूर्व मध्यकालीन वंश 64
- मिथिला के कर्नाट शासक (1097-1324) ------------ **66**

मध्यकालिन इतिहास

3. बिहार का मध्यकालीन इतिहास.....68

- तुर्क आक्रमण..... 68
- बिहार में अफगान शक्ति..... 69
- शेरशाह का योगदान 80
- बिहार एवं मुगल शासन..... 84

आधुनिक इतिहास

4. बिहार का आधुनिक इतिहास.....89

- बिहार में यूरोपीय व्यापारियों का आगमन..... 89
- अंग्रेज और बिहार..... 90
- बिहार में ब्रिटिश-विरोधी संघर्ष..... 92
- प्रमुख विद्रोह तथा आन्दोलन 93
- बिहार के प्रमुख जनजातीय आन्दोलन..... 94
- प्रमुख जनजातीय विद्रोह..... 94
- 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रवाद का विकास..... 100
- बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन..... 101
- खिलाफत और असहयोग आंदोलन..... 103
- क्रांतिकारी आंदोलन..... 106
- बिहार में किसान आन्दोलन..... 107
- स्वतंत्रता प्राप्ति और बिहार..... 108
- बिहार राज्य का गठन..... 109
- आधुनिक इतिहास में बिहार से संबंधित प्रमुख व्यक्तित्व..... 110

5. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहार के विभिन्न वर्गों की भूमिका.....113

- बिहार के किसान और स्वतंत्रता आंदोलन..... 113
- स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार के छात्रों का योगदान..... 116
- असहयोग आंदोलन से सविनय अवज्ञा आंदोलन के मध्य छात्रों का योगदान..... 116
- सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा 1947 के मध्य बिहार के छात्रों की गतिविधियां..... 117
- बिहार की महिलाओं का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान..... 118
- स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार के मजदूर वर्ग का योगदान..... 120
- स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार के साहित्यकारों का योगदान..... 121
- स्वतंत्रता आंदोलन में साधु-संतों का योगदान..... 124
- बिहार के प्रसिद्ध (क्रांतिकारी)..... 125
- सारण जिला 125
- दरभंगा जिला 130
- मुंगेर जिला 131
- भोजपुर जिला 132

➲ वैशाली जिला 133
➲ पटना जिला..... 135
➲ भागलपुर जिला 138
➲ बिहार से संबंधित अन्य प्रमुख क्रांतिकारी..... 139
➲ बिहार के प्रमुख ऐतिहासिक एवं चर्चित व्यक्तित्व 144

6. बिहार: ऐतिहासिक काल क्रम.....148
➲ प्राचीनकाल के ऐतिहासिक काल क्रम..... 148

खंड (ख)

बिहार की कला एवं संस्कृति

7. बिहार में कला एवं संस्कृति का विकास.....154
➲ ऐतिहासिक चरण..... 154
➲ आधुनिक कला 155
➲ साहित्य..... 156
➲ शिक्षा पद्धति 158
➲ आधुनिक काल में शिक्षा पद्धति 159
➲ धर्म एवं दर्शन..... 163

8. बिहार की स्थापत्य कला 169
➲ प्राचीन स्थापत्य कला..... 169
➲ मध्यकालीन स्थापत्य कला..... 176
➲ आधुनिक स्थापत्य कला..... 178

9. बिहार में मूर्ति कला 179
➲ पूर्व मध्यकालीन मूर्तिकला..... 185

10. बिहार में चित्रकला.....187
➲ पाल-युग की चित्रकला..... 187
➲ पटना कलम शैली..... 190
➲ उत्तरवर्ती मुगल शासन में चित्रकला 193
➲ मिथिला या मधुबनी चित्रकला..... 194

खंड (ग)

बिहार का समाज

11. बिहार की लोक संस्कृतियां.....200
➲ भोजपुरी समाज..... 200
➲ मगही समाज..... 211

- मिथिला समाज 219
- बिहार के लोकनाट्य 229
- बिहार के लोक नृत्य 231
- बिहार के प्रमुख मेले 237
- प्रमुख वाद्य यंत्र 239
- बिहार के खाद्य पदार्थ 240
- अन्य प्रमुख पर्व और त्यौहार 242

12. बिहार की भाषाएं 246

- मैथिली 246
- अंगिका 247
- वज्जिका 248
- मगही 249
- भोजपुरी 250
- थारू 251
- बिहार की भाषाएं और बोलियां 252
- बिहारी भाषा समूह 258
- हिन्दी साहित्य में बिहार का योगदान 261
- खड़ी बोली 262
- भारतेंदु युग का योगदान 263
- द्विवेदी युग का योगदान 265
- प्रपद्यवादियों का योगदान 267
- बिहार के प्रमुख साहित्यकार 267
- भोजपुरी भाषा एवं साहित्य 269
- मिथिला की साहित्यिक एवं दार्शनिक परम्परा 275
- बिहार का लोक साहित्य 279
- लोक साहित्य की श्रेणी 282

13. बिहार में संगीत 287

- बिहार की संगीत परम्परा 287

14. बिहार में पर्यटन 294

- बिहार में पर्यटन विकास की संभावनाओं वाले क्षेत्र 295
- प्रमुख पर्यटक केंद्र 296
- प्रमुख दर्शनीय स्थल 297
- बिहार के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल 300
- हिन्दुओं के उपासना-स्थल 301
- जैन धर्म के प्रमुख तीर्थ स्थान 304
- बौद्ध धर्म के प्रमुख तीर्थ स्थान 305
- मुसलमानों के उपासना स्थल 306

➲ सिख धर्मावलबिंयों के धर्म-स्थल 307
➲ ईसाई धर्म के प्रमुख धर्म-स्थल 307
➲ बिहार के प्रमुख परिपथ 307
➲ बुद्ध परिपथ 313
➲ सूफी परिपथ 321
➲ सूफी सर्किट में शामिल प्रमुख स्थल 325
➲ कोशी परिपथ 327

15. बिहार में फिल्म विकास 335
➲ आरम्भिक इतिहास 335

❑❑❑❑

बिहार का इतिहास

- ✓ बिहार का इतिहास जानने के स्रोत
- ✓ बिहार का प्राचीन इतिहास
- ✓ बिहार का मध्यकालीन इतिहास
- ✓ बिहार का आधुनिक इतिहास
- ✓ भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहार के विभिन्न वर्गों की भूमिका
- ✓ बिहार: ऐतिहासिक काल क्रम

01
अध्याय

बिहार का इतिहास जानने के स्रोत

बिहार के प्राचीन, मध्यकालीन व आधुनिक इतिहास को जानने हेतु पुरातात्विक, साहित्यिक, यात्रा वृत्तांत व अन्य देशी स्रोत उपलब्ध हैं। इसके अंतर्गत प्राचीन शिलालेख, सिक्के, पट्टे, दानपत्र, ताम्रपत्र, राजकाज संबंधी खाते, बहियां, दस्तावेज, विदेशी यात्रियों के यात्रा वृत्तांत, स्मारक, इमारतें, मंदिर, किले, स्थापत्य व चित्रकला के नमूने एवं साहित्य आदि विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। मूलतः बिहार स्थित स्थल जहां पर ऐतिहासिक स्मारक या पुरातात्विक सामग्री व अन्य चीजें उपलब्ध हैं, उनकी चर्चा यहां विशेष रूप से की जा रही है।

इसके अलावा बिहार से बाहर देश के अन्य स्थानों जैसे कन्नौज, प्रयाग, मथुरा, इलाहाबाद, मालवा/पूना आदि अनेक स्थानों पर ऐसे अभिलेख व अन्य साक्ष्य आदि मौजूद हैं, जिनमें प्राचीन बिहार में मगध साम्राज्य के अनेक शासकों व जैन, बौद्ध धर्म संबंधित तमाम जानकारियां बिखरी पड़ी हैं। इन स्मारकों स्तंभों, अभिलेखों व पत्रों में प्राचीन बिहार व मगध साम्राज्य के राजवंश से जुड़ी उपलब्धियों व कार्यों के विवरण मिलते हैं। इससे ऐतिहासिक कालक्रमों की कड़ियों को जोड़ने में काफी मदद भी मिली है। जाहिर है ऐतिहासिक स्रोतों के तहत न केवल बिहार में पायी गयी सामग्री व स्थल बल्कि भारत के अनेक स्थानों एवं चीन, तिब्बत, अरब, श्रीलंका, बर्मा व दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों आदि में उपलब्ध या वहां से प्राप्त विवरणों, चीजों में भी यहां शामिल करने की कोशिश की गयी है। इन स्थानों से छात्र व विदेशी यात्रियों के आगमन बौद्ध-जैन धर्म के प्रचारकों, दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों से होने वाले व्यापार आदि के कारण प्राचीन बिहार के अनेक स्थानों, पाटलिपुत्र, वैशाली, बोधगया, नालंदा, राजगीर, पावापुरी, अंग आदि से व्यापक संपर्क थे।

वर्तमान बिहार के मुंगेर और नालंदा से पूर्व-प्रस्तर एवं मध्य प्रस्तर युग (Lower Paleolithic-Middle Paleolithic age) 1 लाख ई. पू. से पहले और 40 हजार ई. पू. तक) के छोटे-मोटे औजार मिले हैं। सारण स्थित चिरांद और वैशाली स्थित चेचर से नवप्रस्तर युग (2500-1500 ई. पू.) सामग्री प्राप्त हुई है। चिरांद (सारण), चेचर (वैशाली), सोनपुर (गया जिला), मनेर पटना से ताम्र प्रस्तर युगीन (1500-1000 ई. पू.) वस्तुएं एवं मृद्भांड उपलब्ध हुए हैं। मौर्यकालीन अभिलेख लौरिया नंदनगढ़, लौरिया-अरेराज, रामपुरवा आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

इसी प्रकार बड़ी मात्रा में सिक्के भी इस क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं जिनमें आरंभिक आहत सिक्कों से गुप्तकालीन सिक्के तक शामिल हैं। इसके अलावा राजगीर, नालंदा, पाटलिपुत्र एवं बराबर की पहाड़ियों में स्थित प्राचीन काल में महत्वपूर्ण स्मारक भी मिले हैं। ये पुरातात्विक स्रोतों के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

साहित्यिक स्रोत

साहित्यिक स्रोतों के अंतर्गत आठवीं सदी ई. पू. में रचित शतपथ ब्राह्मण, परवर्ती काल के विभिन्न पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध रचनाओं में अंगत्तुर निकाय, दीघ निकाय, विनय पिटक, जैन रचनाओं में भगवती सूत्र आदि धार्मिक रचनाएं होने के साथ-साथ ऐतिहासिक स्रोत के रूप में भी महत्वपूर्ण हैं।

वैदिक संहिता: चारों वैदिक ग्रथों- 1. ऋग्वेद, 2. सामवेद, 3. यजुर्वेद तथा 4.अथर्ववेद में आधुनिक बिहार के क्षेत्र के वर्णन मिलते हैं। प्रत्येक संहिता के लिये अलग-अलग ब्राह्मण ग्रन्थ हैं, जैसे- **ऋग्वेद:** ऐतरेय तथा कौषीतकी, ऋग्वेद में बिहार वासियों को कीकट कहा गया है। **यजुर्वेद:** तैतिरीय तथा शतपथ **सामवेद:** पंचविश, **अथर्ववेद**: गोपथ। बिहार का प्राचीनतम वर्णन अथर्ववेद (10वीं-8वीं सदी ई. पू.) तथा पंचविश ब्राह्मण (8वीं-छठी सदी ई. पू.) में मिलता है। इसमें बिहार निवासियों को ब्रात्य कहा गया है।

इन ग्रन्थों से हमें परीक्षित के बाद और बिम्बिसार के पूर्व की घटनाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। ऐतरेय, शतपथ, तैत्तिरीय, पंचविश आदि प्राचीन ब्राह्मण ग्रन्थों में अनेक ऐतिहासिक तथ्य मिलते हैं।

प्रमुख साहित्यिक ग्रन्थ

- **ऐतरेय ब्राह्मण:** इसमें राज्याभिषेक के नियम तथा कुछ प्राचीन अभिषिक्त राजाओं के नाम दिये गये हैं।
- **शतपथ ब्राह्मण:** इसमें में गान्धार, शल्य, कैकय, कुरु, पंचाल, कोसल, विदेह आदि के राजाओं का उल्लेख मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में बिहार के आर्यों के आगमन व बसने का विस्तृत वर्णन है। प्राचीन इतिहास के साधन के रूप में वैदिक साहित्य में ऋग्वेद के बाद शतपथ ब्राह्मण का स्थान है। इसी प्रकार आरण्यक तथा उपनिषदों में भी कुछ ऐतिहासिक तथ्य प्राप्त होते हैं।
- **पुराण:** पुराणों में मत्स्य, वायु तथा ब्रह्मांड पुराण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पुराणों में उत्तर मौर्य युग की जानकारी मिलती हैं। इससे पता चलता है कि शुंग वंश का संस्थापक पुष्यमित्र था। पुष्यमित्र 36 वर्षों तक शासन किया। बिहार के संदर्भ में पुराण, रामायण और महाभारत से पर्याप्त जानकारी मिलती है।
- **पतंजलि का महाभाष्य:** पुष्यमित्र के पुरोहित पतंजलि ने महाभाष्य की रचना की। इसमें यवनों से आक्रमण की चर्चा की गयी है।
- **मालविकाग्निमित्र:** यह महाकवि कालीदास का नाटक ग्रंथ है। इससे शुंग कालीन राजनैतिक गतिविधियों का पता चलता है। कालीदास यवन आक्रमण का भी उल्लेख करते हैं, जिसके अनुसार (पुष्यमित्र के अग्निमित्र पुत्र) के पुत्र वसुमित्र ने सिंधु सरिता के दाहिने किनारे पर यवनों को पराजित किया था।
- **थेरावली:** इसकी रचना जैन लेखक मेरुतुंग ने किया था। इस ग्रंथ में उज्जयिनी के शासकों की वंशावली दी गयी है। यहां पुष्यमित्र के बारे में उल्लेख है कि उसने 30 वर्षों तक राज्य किया।
- **दिव्यावदान:** यह एक बौद्ध ग्रंथ है। इसमें पुष्यमित्र को मौर्यवंश का अंतिम शासक कहा गया। विवरण अविश्वसनीय है।
- **पाणिनी की अष्टाध्यायी:** इसमें 400 सूत्र तथा आठ अध्याय हैं। संस्कृत व्याकरण की यह सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वप्रसिद्ध ग्रंथ है। यह पांचवीं सदी ई. पू. की अत्यंत वैज्ञानिक रचना है।
- **कौटिल्य का अर्थशास्त्र:** यह विशेषकर मौर्यकालीन इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत है।

छह वेदांग तथा सूत्र: वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये सूत्र साहित्य का प्रणयन किया गया। श्रोत, गृह्य तथा धर्मसूत्रों के अध्ययन से यज्ञीय विधि-विधानों, कर्मकाण्डों तथा राजनीति, विधि एवं व्यवहार से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण बातों की जानकारी मिलती है।

ऋग्वेद से लेकर सूत्रों तक के सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का काल ईसा पूर्व 2000 से लेकर 500 के लगभग एक सामान्य तौर से स्वीकार किया जा सकता है।

स्मृति-ग्रन्थ: स्मृतियों में मनुस्मृति सबसे प्राचीन तथा प्रमाणिक मानी जाती है। अन्य स्मृतियों में याज्ञवल्क्य, नारद, बृहस्पति, कात्यायन, देवल आदि की समृतियां उल्लेखनीय हैं।

बिहार की कला एवं संस्कृति

- ✓ बिहार में कला एवं संस्कृति का विकास
- ✓ बिहार की स्थापत्य कला
- ✓ बिहार में मूर्ति कला
- ✓ बिहार में चित्रकला

07
अध्याय

बिहार में कला एवं संस्कृति का विकास

बिहार राज्य की संस्कृति महान, समृद्ध तथा प्रेरणापूर्ण रही है। प्राचीनकाल से ही यहां मानव की आत्मा तथा मानवता का मानस, शतदल की भांति अनगिनत सुन्दर पंखुड़ियों में विकसित हुआ जिससे भारत की महान संस्कृति समृद्ध हुई। 'मिनहाज-उस-सिराज' द्वारा रचित 'तबकात-ए-नासिरी' में बिहारशरीफ के नाम पर बिहार सूबे की प्रथम बार चर्चा आई है।

1912 ई. में बंगाल से अलग होकर और 1936 ई. में उड़ीसा से अलग होकर बिहार एक स्वतंत्र राज्य बना। उत्तर वैदिक युग में ही इस सूबे ने इतिहास के पन्नों पर अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। इसी काल में आर्य मगध एवं मिथिला के क्षेत्र में बसे। अथर्ववेद में मगध की चर्चा आई है।

ईसा पूर्व नौवीं शताब्दी में हुये महाभारत युद्ध का संबंध राजगृह से रहा है। बिहार में ही ईसा पूर्व छठी शताब्दी में धर्म सुधार की उन भाव धाराओं के महान स्रोत प्रवाहित हुये थे, जिन्हें महावीर तथा गौतम जैसे धर्म प्रचारकों ने सारे विश्व में साम्य, मैत्री, अहिंसा, सहिष्णुता, प्रेम तथा सेवा के रूप में प्रवाहित किया था।

बिहार में गंगा के उत्तर का विदेह प्रान्त इतिहास के उषाकाल से ही ज्ञान तथा संस्कृति का केन्द्र रहा है। इन सब तथ्यों के आधार पर बिहार की गौरवशाली गाथा को समझा जा सकता है। कला एवं संस्कृति के महत्वपूर्ण पहलुओं को यह राज्य अपने ऐतिहासिक आंचल में हजारों वर्षों से समेटे हुए है।

ऐतिहासिक चरण

प्राचीन बिहार

कला और संस्कृति के क्षेत्र में बिहार में कई ऐतिहासिक चरण देखने को मिलते हैं। आधुनिक झारखंड का क्षेत्र, प्राक् इतिहास काल के अध्ययन के लिये अति महत्वपूर्ण रहा है।

आधुनिक बिहार पहले मगध के नाम से जाना जाता था। यह राजगृह से नेपाल के दक्षिणी हिस्से तक फैला हुआ था। इस इलाके ने उत्तर वैदिक काल से ही कला एवं संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कला: यहां के कलाकारों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी यान्त्रिकी और गणित के विज्ञान को सीखा। भवन सामग्रियों का ज्ञान प्राप्त किया। पत्थर काटने, तराशने और ईट पत्थर को सजाने से लेकर कला-विज्ञान को सीखने के बाद जो उपलब्धियां प्रस्तुत की, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वैभवशाली भारत के प्रभुता-सम्पन्न स्वरूप को अधिक ऊंचा उठाने में शिल्प और स्थापत्य कला की भूमिका नि:सन्देह अति महत्वपूर्ण रही है।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में भवन-निर्माण के सिलसिले में कलात्मक पहलू दिखाई देने लगते हैं। ऐसी गतिविधियों का प्रारंभिक केन्द्र राजगीर बना। कुछ ही दिनों के पश्चात् पाटलिपुत्र की स्थापना मगध के शासकों ने की।

मौर्य कालीन वास्तुकला: मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में पाटलिपुत्र विश्व का प्रसिद्ध नगर बन गया, जिसकी तुलना तत्कालिन प्रसिद्ध नगर 'सुसा' और 'एकबताना' से की जाने लगी थी। इस गौरवशाली गाथा का प्रसिद्ध मापदंड कला और संस्कृति को माना गया।

अशोक के काल में कलात्मक निर्माण में प्रथम बार लकड़ी के बदले शिलाखण्डों का प्रयोग हुआ। अशोक के स्तम्भ, उस पर बने सिंह की त्रिमूर्ति, सांढ़ और धर्मचक्र तथा यक्ष की नारी मूर्ति तत्कालीन मूर्तिकला के ज्वलंत उदाहरण हैं।

भवन निर्माण में इसी समय पत्थरों का प्रयोग किया जाने लगा। अशोककालीन कला विदेशी कलाकारों के सहयोग से विकसित हुई थी। इसमें जो निखार पाया गया, उसकी अनुपस्थिति हम शुंग कला में पाते हैं।

शुंगकालीन वास्तुकलाः परन्तु तुलनात्मक दृष्टि से शुंगकालीन कला में कोमलता ज्यादा पाई गई है। इसमें प्रतीकात्मक वस्तुओं के माध्यम से बुद्ध के संदेश जीवित किये गये हैं। कुषाण काल में बुद्ध की मूर्तियां बनने लगी थी।

गुप्त कालीन वास्तुकलाः गुप्त काल में शिव, विष्णु एवं दुर्गा की मूर्तियां बनने लगीं। ये कला के चरणात्मक बदलाव के प्रतीक थे। उत्तर गुप्त काल से इस काल के निखार में कमी और नवीनता पायी जाने लगी।

मध्यकालीन कला

बिहार में शिल्प कला की समृद्धि बारहवीं सदी तक सुप्रतिष्ठित थी और गुप्त-काल की कला-पद्धति के अनुसरण से बहुत सी पत्थर तथा पीतल की मूर्तियां पाल-राजाओं के शासन-काल में बनाई गई थीं।

पीतल की मूर्तियां अधिकांशतः बौद्ध धर्म से संबंधित हैं, परन्तु कुछ ब्राह्मण धर्म के अंतर्गत (जैसे गंगा, बलराम, विष्णु तथा सूर्य की मूर्तियां) भी पाई गई हैं।

मुस्लिम शासन-काल में इमारतें, मजार और मस्जिदें तुर्क और मुगल कला का आधार लेकर बनती हैं। इन पर इस्लामिक संस्कृति का प्रभाव था। शेरशाह के समय में मुस्लिम स्थापत्य कला बिहार में बहुत ही उन्नत और विकसित हुई।

शेरशाह कालीन कलाः शेरशाह का सासाराम (रोहतास जिला) स्थित मकबरा, जो एक विशाल झील के बीच में ऊंचे चबूतरे पर निर्मित है, हिन्दू तथा मुस्लिम-स्थापत्य के सम्मिश्रण का एक महान तथा सुन्दर नमूना है।

इसकी बनावट में हिन्दुओं की निर्माण कला तथा मुस्लिम स्थापत्य-काल का सुन्दर और महत्वपूर्ण समन्वय हुआ है।

आधुनिक कला

गोथिक शैली में गोल, ऊंचे तथा विशाल स्तम्भों पर आधारित भवनों का निर्माण होने के भी काफी प्रमाण मिलते हैं। पटना विश्वविद्यालय का व्हीलर सीनेट हॉल, साइंस कॉलेज के भवन में प्रयोग किये गये स्तम्भ एवं डच शैली में निर्मित पटना कॉलेज की इमारतें इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

राजपूत और बंगाल कला शैली का प्रभावः बिहार की कला राजपूत शैली से भी प्रभावित है। इसका उदाहरण पटना संग्रहालय भवन है। अंग्रेजों के समय में बिहार के कई क्षेत्रों में बड़ी-बड़ी बस्तियां बसीं।

इन बस्तियों में निर्मित भवनों को देखकर यह निष्कर्ष आसानी से निकाला जा सकता है कि इन इलाकों में निर्मित भवन बंगाल की कला एवं संस्कृति से प्रभावित हैं।

बंगालियों द्वारा निर्मित ऐसे अधिकांश भवनों की बाहरी पुताई प्रायः लाल या गेरूवे रंग से की जाती थी और अन्दर के कमरें उजले रंग से रंगे जाते थे। कुछ भवनों की बाहरी पुताई बादामी रंग से की जाती थी। खिड़कियां इस शैली में निर्मित की जाती थी ताकि अधिकांश कमरों तक धूप और खुली हवा का प्रवेश आसानी से हो सके।

बिहार का समाज

- ✓ बिहार की लोक संस्कृतियां
- ✓ बिहार की भाषाएं
- ✓ बिहार में संगीत
- ✓ बिहार में पर्यटन
- ✓ बिहार में फिल्म विकास

11
अध्याय

बिहार की लोक संस्कृतियां

भोजपुरी समाज

भोजपुरी क्षेत्रः इसका क्षेत्र विस्तृत है- इसमें बिहार में सारन (छपरा), सीवान, गोपालगंज, भोजपुर (आरा), रोहतास (सासाराम), डाल्टेन गंज, रांची

(वर्तमान में झारखण्ड के कुछ भागों में), पूर्वी चम्पारन (मोतिहारी), पश्चिमी चम्पारन (बेतिया) एवं उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर, वाराणसी, गाजीपुर, आजमगढ़, मऊनाथ भंजन, महाराजगंज, देवरिया, बस्ती, सिद्धार्थनगर तक इसका प्रभाव है।

इसके अतिरिक्त नेपाल की तराई के थारू, जशपुर रियासत से लेकर विदेशों में मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, ब्रिटिश गुआना, युगांडा आदि में भी भोजपुरी समाज अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखे हुए है।

भोजपुरी के सम्बन्ध में मान्यताएंः भोजपुरी के संबंध में अनेक मान्यताएं हैं- माना जाता है की इसका नामकरण मालवा के राजा भोजदेव के नाम गुर्जर-प्रतिहार मिहिर भोज के नाम पर, उज्जैन के भोजों के नाम पर, विश्वामित्र के यजमान भोजों के नाम पर विकसित हुआ है।

वर्तमान भोजपुरः बक्सर परगने में डुमरांव नगर से तीन मील पर 'भोजपुर' गांव है, जो 'पुरनका भोजपुर' तथा 'नयका भोजपुर' कहा जाता है। वर्तमान में बिहार में भोजपुर जिला है। इस अंचल की बोली भोजपुरी है, इसे लगभग 12 करोड़ लोग बोलते हैं।

महत्वः भोजपुरी अंचल में गौतमबुद्ध, महावीर जैन एवं विश्वामित्र जैसे महापुरुष रहे हैं। उज्जैन तथा मालवा के शक्तिशाली शासकों ने यहां राजधानी बनाई।

प्राचीन काल में भोजपुर के वैभवशाली संस्कृति से पूरा देश प्रभावित रहा। अंग्रेजी सत्ता को कुंवरसिंह तथा मंगल पाण्डे से बहुत बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा।

आधुनिक भारत में भोजपुर क्षेत्र का अपना महत्व है। भोजपुरी लोक-संस्कृति के विविध पक्षों को इन बिंदुओं के अंतर्गत प्रस्तुत किया जा सकता हैः

परिधान

पुरुषों के वस्त्रः वस्त्रों का संबंध भौगोलिक स्थिति पर निर्भर करता है। हिमालय की तराई से लेकर गंगा-सोन के मैदानी भागों तक फैले इस क्षेत्र में पुरुष विवाह आदि के अवसर पर सिर पर पगड़ी बांधते हैं, जिसे 'साफा' भी कहते हैं।

- पगड़ी प्रतिष्ठा का प्रतीक भी है।
- रेशम की पतली, महीन पगड़ी, को 'मुरेठा' कहते हैं।
- युवा वर्ग सफेद मलमल की टोपी 'दुपलिया' पहनता है।
- शीत से बचने के लिए कनटोप भी पहना जाता है।
- गले पर चादर या गमछा-गमछी रखने की परम्परा है।
- गरीब लोग सूती कुर्ता, जिसे 'मोटिया' कहा जाता है, पहनते हैं। इसमें बटन के स्थान पर 'मुद्धी' लगी होती है।

- कुर्ता चूड़ीदार, पंजाबी तथा छवकलिया भी होता है।
- बगल बंदी, मिरजई व शेरवानी पहनने का भी रिवाज है। जाड़े में रूई-गद्दा बहुत उपयोगी होता है।
- अधोवस्त्रों में मोटे सूत की कोरी या धुली हुई धोती कन्नीदार या बिना किनारे की होती है।
- विवाह में पीले रंग से रंग देने पर यही 'पियरी' हो जाती है। लगोट भी पहनने का रिवाज बहुत है।
- चमरौधे जूते का बहुत प्रचलन है। इस कड़े जूते को मुलायम करने के लिए ओस की बूंद या सरसो, महुआ, रेड़ी (अरण्डी) का तेल पिलाया जाता है। तल्ले में लोहे की नाल भी लगवाते है।
- खड़ाऊ में सादा, खूंटीदार तथा 'बधौरा' (बाध की रस्सी वाला) का प्रयोग होता है।

दूल्हा जोड़ाः दूल्हा जामा पहनता है।

- 'जामा' स्त्रियों के घाघरे की तरह का होता है।
- दूल्हे अब धोती पहनने लगे हैं।
- दूल्हे के कामदार, लाल रंग के मुलायम जूते को 'सलेमशाही' कहा जाता है तथा लाल मोजे को 'पायताबा'।
- मुकुट, 'मऊरी' गोलाकार तथा ऊंचा होता है, जिसमें रंगीन-कागज, गोटा एवं तार लगे होते हैं।

स्त्रियों के वस्त्रः स्त्रियों के सिर ढ़ंकने के लिए 'ओढ़नी' का प्रयोग किया जाता है।

- बिना आस्तीन का कमर तक लम्बा 'झूला' एवं आस्तीन सहित 'कुरती' का रिवाज है।
- कुरती कोट की तरह आगे खुली होती है।
- 'चोली' का प्रचलन युवतियों में है।
- सफेद साड़ी को 'लूगा' कहते हैं, रंगीन को 'साड़ी'। गरीब स्त्रियों की फटी-पुरानी मैली साड़ी को 'लूगा' और 'लुगरी' कहा जाता है।
- साड़ी के नीचे बिना सिले हुए कपड़े को 'सटुआ' कहते हैं।
- स्त्रियों का जूते पहनना भोजपुरी समाज में अच्छा नहीं माना जाता है।
- निम्न वर्ग की बूढ़ी स्त्रियां 'खरपा' पहनती हैं, मध्यम वर्ग में चप्पल का फैशन है। 'चट्टी' अथवा 'चटाकी' का भी प्रचलन है।

बच्चों के वस्त्रः चार-पांच वर्ष तक के बच्चे केवल 'मगही' पहनते हैं, जिसे कमर में बांध दिया जाता हैं, जबकि बड़े बच्चे 'घुटन्ना' पहनते हैं। जाड़े में छोटे बच्चों को सिर से पैर तक मोटे कपड़े की 'गांती' बांध दी जाती है।

अलंकरणः लोक-समाज में आभूषण को 'स्त्रीधन' समझा जाता है, जो बहू को लड़के वाले आवश्यक रूप से देते हैं। भोजपुरी स्त्रियां पैरों में पायल, पायजेब, कड़ा या छड़ा, छोटे-छोटे घुंघरू की बिछिया और पावट पहनती हैं। झांझ (कंकड़ के झन-झन की आवाज के कारण) एवं 'गोड़हरा' का भी प्रचलन है।

- निम्न जाति की स्त्रियां पैरी पहनती हैं। कमर में करधनी तथा 'डंडकसनी' का प्रयोग होता है।
- अंगुली में- 'मुनरी' बहुत लोकप्रिय है।
- कलाई में पहुंचा, कंगना, पहुंची, चूड़ा, हथउरा पहना जाता है।
- बांह में 'बाजूबंद, जासन, बांक, बहरबूंटा, विजायठ, अनंत का रिवाज है।
- वक्षस्थल पर हार, तीनलर की 'तिलरी' पांच लर की पंचलड़ी, सतलड़ी, मोहरमाला, बजर बूटी पहनती हैं।
- गले में हंसुली, सोने का कंठा, कंठेसरि, तिलरी चंपाकली, फूलझरी, जोगिनी पहनी जाती है। कान में बेसर, झुलरी बहुत लोकप्रिय है। एक तीन पत्तेवाली तथा झोंपदार नथिया, दुलाक बूढ़ी स्त्रियां पहनती हैं।
- सिर में मागंटीका (सौभाग्य का सूचक) का प्रचलन है।